ॐ स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प – जीवन विज्ञान : आचार्य महाप्रज्ञ, जीवन विज्ञान प्रणेता ॐ

Jeevan Vigyan (Science of Living)
e-Newsletter

Volume : 3; Number : 7
Editor
Hanuman Mal Sharma

जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प

इच्छा प्राणीमात्र का असाधारण गुण है, विशिष्ट गुण है। जिसमें इच्छा नहीं होती, वह प्राणी नहीं होता। यह प्राणी और अप्राणी की भेदरेखा है। मनुष्य में इच्छा पैदा होती है। इच्छा पैदा होना एक बात है किन्तु इच्छा को स्वीकार करना और इच्छा को अस्वीकार करना दूसरी बात है। इच्छा की कांट–छांट मनुष्य ही कर सकता है। अन्य प्राणी ऐसा नहीं कर सकते। मनुष्य की विवेक चेतना जागृत होती है, इसलिये वह हर इच्छा को स्वीकार नहीं करता। यदि वह प्रत्येक इच्छा को स्वीकार करता चले तो सारी व्यवस्था गड़बड़ा जाती है। एक सुन्दर मकान देखा, किसकी इच्छा नहीं होगी कि मैं इस मकान में रहूं? रास्ते में खड़ी सुन्दर कार को देखा, कौन नहीं चाहेगा कि मैं इसमें सवारी करूं? इच्छा हो सकती है; पर वह यह सोचकर इच्छा को अमान्य कर देता है कि यह मेरी सीमा की बात नहीं है। यह है विवेक–चेतना का काम।

शिक्षा का काम है कि वह मनुष्य–मनुष्य में विवेक–चेतना को जगाए। इससे संवेग–नियंत्रण और संवेदनाओं तथा आवेगों पर नियंत्रण करने की क्षमता पैदा होती है। **– आचार्य महाप्रज्ञ।**

स्वाध्याय से होता है संस्कारों का पुष्टिकरण : आचार्य महाश्रमण (जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता–2012 का शुभारम्भ)

जसोल 11 जुलाई। ''जीवन विज्ञान का अवदान शिक्षा के लिए वरदान है। जीवन विज्ञान के माध्यम से संस्कार देने के लिये जहां एक ओर अच्छे प्रशिक्षित प्रशिक्षक एवं शिक्षक होने चाहिए वहीं स्वाध्याय के माध्यम से भी संस्कार–बीजों का वपन किया जा सकता है। जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता इस कार्य में अपनी महत्ती भूमिका अदा कर रही है। प्रश्नोत्तरी में दिये गये प्रश्नों के हल खोजने के लिये प्रतिभागी को तत्संबंधी साहित्य का अध्ययन करना पड़ता है जिससे सहज ही स्वाध्याय का क्रम पूरा होता है और अच्छे विचार व्यक्ति के मस्तिष्क में रोपित होने में सहायता प्राप्त होती है। स्वाध्याय से संस्कारों का पुष्टिकरण भी होता है। संस्कार की बातें पहले दिमाग में पहुंचती है फिर दिल एवं चेतना में आती है, पश्चात् यह जीवन में आती हैं।'' उपरोक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ द्वारा आयोजित ''जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता–2012'' की प्रश्नोत्तरी के विमोचन के अवसर पर कही। प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने प्रतियोगिता की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस माध्यम से समाज में एक नई जागृति का निर्माण होता है। **क्रमशः पृष्ठ–2, पैरा..2**

आओ हम जीना सीखें : आत्मनिरीक्षण कब करें?

व्यक्तित्व विकास के लिये आत्मनिरीक्षण अत्यन्त आवश्यक है। किसी एक दिन या विशेष पर्व पर ही नहीं किन्तु प्रतिदिन के लिये करणीय है। कहा भी गया है – **उत्थायोत्थाय बौद्धव्यं, किमद्य सुकृतं कृतम्। आयुषः खण्डमादाय, रविरस्तमयं गतः।।** अर्थात् व्यक्ति सुबह उठने से लेकर रात्रि में शयनकाल तक का आत्मप्रतिलेखन करे– आज मैंने कोई पवित्र कार्य किया या नहीं? यह जीवन क्षणिक है। आयुष्य प्रतिदिन घट रहा है। सूर्य प्रतिदिन आयुष्य का एक खण्ड लेकर अस्त होता है। ऐसी स्थिति में जीवन का सुखद सहयात्री यदि कोई है तो वह सुकृत का उपार्जन ही है। जो व्यक्ति अपने जीवन में सुकृत का अर्जन करता है वही वास्तव में अपने जीवन को सफल बना सकता है।

जिस व्यक्ति की चेतना आत्मदर्शन की ओर अग्रसर हो जाती है, उसके परदोषदर्शन के संस्कार स्वतः छूट जाते हैं। वह विधायक भावों में रमण करने लगता है और अपने जीवन को सही दिशा की ओर मोड़ता हुआ औरों के लिये भी आदर्श बन जाता है। अपेक्षा है आत्मदर्शन की वृत्ति जागृत हो। – **आचार्य महाश्रमण।**

जीवन विज्ञान प्रशिक्षक–कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न

जसोल 25 जुलाई। जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती की ओर से श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, जसोल में आयोजित जीवन विज्ञान प्रशिक्षक–कार्यकर्ता सम्मेलन के संभागियों को सम्बोधित करते हुए परमपूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि आदमी के शारीरिक व्यक्तित्व का महत्व होता है पर आदमी के जीवन में गुण अच्छे होने चाहिए। उसमें प्रतिकूल परिस्थितियों को झेलने व भागदौड़ कर सकने की क्षमता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आदमी का वाचिक व्यक्तित्व भी अच्छा होना चाहिए। बोलना एक कला है और व्यक्ति की वाणी में गुणवत्ता होनी चाहिए। बात को अनावश्यक लम्बाना वाणी का विष है और निसार बोलना भी दोष है। जीवन विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आपने बताया कि जीवन विज्ञान का मुख्य ध्येय भावात्मक विकास है। आदमी के भीतर विभिन्न भाव होते हैं। व्यक्ति में कभी ऋजुता तो कभी छलना की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। कभी हिंसा–कभी अहिंसा, कभी अच्छे–कभी बुरे, कभी सद्भाव तो कभी असद्भाव देखे जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति का लक्ष्य हिंसा से अहिंसा और असत् से सत् की ओर जाने का हो। **क्रमशः पृ.2...पैरा.2**

प्रेक्षा अनुप्रेक्षा से बनाएं निर्मल चित्त : मुनि किशनलाल

भाव क्या है? भाव हमारे भीतर से उठने वाली उर्मियां हैं। प्रतिक्षण कोई न कोई भाव भीतर प्रकट होता है। भाव को अनुप्रेक्षा वृत्ति भी कहते हैं। संसारी चेतना कर्मों से आवृत्त है। कर्मों का उदय और विलय प्रतिक्षण होता रहता है। कर्म चेतना को प्रभावित करते हैं। चेतना की निर्मल रश्मियों और कषाय की मैली रश्मियों से प्रकट होने वाली भीतरी उर्मियों को भाव कहा गया है। भावधाराएं जब रंगों में अभिव्यक्त होती है, तब उन्हें आभामण्डल कहते हैं। भावों से आभामण्डल प्रभावित होता ह और आभामण्डल से भाव प्रभावित होते हैं। सारी प्रवृत्तियों के पीछे भावधारा का प्रभाव रहता है। इसलिये भावों की शुद्धि आवश्यक है। इसके दो उपाय हैं – प्रेक्षा और अनुप्रेक्षा। प्रेक्षा से सत्य का साक्षात्कार होता है। हमारे पास जानने और अनुभव करने के लिये ज्ञान है। ज्ञान जब प्रियता और अप्रियता से युक्त होता है तब व्यक्ति बंधन में आ जाता है। यदि व्यक्ति प्रियता–अप्रियता से मुक्त रह कर वीतराग भाव से अपने आपको भावित करता रहे तो चित्त की निर्मलता प्रकट होने लगती है। चित्त शुद्धि के लिये भाव शुद्धि आवश्यक है। चित्त की निर्मलता के लिये पहले कायोत्सर्ग करें फिर प्रेक्षा–अनुप्रेक्षा का प्रयोग 5 से 15 मि. करें।

तेरापंथी शिक्षण संस्था प्रतिनिधि सम्मेलन सम्पन्न

जसोल 26 जुलाई। जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ ओर से परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन, जसोल में तेरापंथ समाज द्वारा संचालित विद्यालयों के संचालकों का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में उपस्थित प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि अविनीत को विपत्ति एवं विनीत को सम्पत्ति प्राप्त होती है। आज अनेक विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय हैं। शिक्षा का स्तर अच्छा हो इसके लिये योग्य शिक्षक अपेक्षित हैं। अच्छे शिक्षकों के लिये उनकी अपेक्षाओं की पूर्ति भी आवश्यक है। शिक्षा संस्थान शिक्षा सुविधा के साथ संस्कार निर्माण के केन्द्र बनें। संस्कार निर्माण के बगैर विद्यार्थी के निर्माण में कमी रहती है। तेरापंथ समाज से जुड़े शिक्षण संस्थानों को प्रेरित करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि इन संस्थानों में जीवन विज्ञान एवं जैन विद्या पाठ्यक्रमों का समावेश होना चाहिए। बच्चे इतने योग्य बने कि वे समस्या का निवारण कर सके। विद्यार्थी असाधारण प्रतिभा के साथ श्रुत एवं शील सम्पन्न बनें।

मंत्री मुनि मुनिश्री सुमेरमलजी ने कहा कि प्रशिक्षण देना निर्माण का कार्य है। प्रशिक्षक निर्माता होते हैं। संस्था के उद्देश्यों की संपूर्ति में भी उनका योगदान रहता है। जीवन विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि यह हर किसी के लिये उपयोगी है। जो इसे अपनाता है उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन अवश्य घटित होता है।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने बताया कि शिक्षा के दो रूप हैं – सैद्धान्तिक और प्रायोगिक। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में केवल सैद्धान्तिक पक्ष प्रबल है। प्राचीन गुरुकुलों में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। जीवन विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आपने फरमाया कि जहां जीवन विज्ञान प्रचलित है, वहां परिवर्तन निश्चित होता है। श्री पुखराज खारवाल, प्रधानाचार्य, रा.सी.सै.वि. थोब ने स्वयं का अनुभव प्रस्तुत करते हुए जानकारी दी कि मैंने प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान की गतिविधियों को अपने विद्यालय में संचालित किया और उसका सुखद परिणाम प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों में अनुशासन एवं स्मरण शक्ति में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मुनिश्री विजयकुमारजी द्वारा प्रस्तुत मंगल गीत ''विद्या का वरदान, जीवन विज्ञान'' से हुआ। आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री शान्तिलालजी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन मुनिश्री हिमांशुकुमारजी ने किया।

क्रमशः पृष्ठ–1, पैरा..1 जीवन विज्ञान संबंधी प्रतियोगिता में भाग लेने से सद्–संस्कारों को समाज में फैलने का अवसर प्राप्त होता है। उन्होंने मातृशक्ति को विशेषरूप से प्रतियोगिता में भाग लेने एवं उत्साह के साथ सहयोग करने का इंगित किया।

प्रश्नोत्तरी विमोचन कार्यक्रम का शुभारम्भ मुनिश्री नीरजकुमारजी द्वारा प्रस्तुत गीत 'बनेगा भारत देश महान...' से हुआ। हनुमान मल शर्मा ने प्रतियोगिता के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा लिखित ''शिक्षा जगत् के लिये जरूरी है नया चिन्तन'' एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा लिखित पुस्तक ''दुःख मुक्ति का मार्ग'' इस प्रतियोगिता का आधार साहित्य है। वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षिका श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व.शान्ताबाई सिंघवी की स्मृति में आयोजित इस प्रतियोगिता का आर्थिक सौजन्य माणकराज शान्ताबाई सिंघवी चेरीटेबल ट्रस्ट, वंदवासी, चैन्नई द्वारा प्राप्त हो रहा है। उन्होंने बताया कि जीवन विज्ञान साहित्य आधारित इस प्रतियोगिता का प्रारम्भ वर्ष 2008 से किया गया और इस श्रंखला में वर्ष 2012 की यह पांचवी प्रतियोगिता है। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के पूर्व उपाध्यक्ष जसराज बुरड़ एवं जीवन विज्ञान अकादमी, जसोल के अध्यक्ष रमेश बोहरा के साथ केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूँ के संयुक्त निदेशक ओमप्रकाश सारस्वत एवं सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने प्रतियोगिता साहित्य का सेट पूज्यचरणों में उपहृत किया। प्रतियोगिता की विस्तृत जानकारी केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूँ से प्राप्त की जा सकती है। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री हिमांशुकुमारजी द्वारा किया गया।

शेष पृ.1...पैरा.2 मंत्री मुनि मुनिश्री सुमेरमलजी ने कहा कि हंसकर जीवन जीने वाला व्यक्ति अपनी सांसों का आनन्द लेता है। जीवन विज्ञान व्यक्ति को हर परिस्थितियों में मुस्कुराना सिखाता है। उन्होंने बताया कि शिक्षा के क्षेत्र में जीवन विज्ञान के पाठ्यक्रम से पारिवारिक जीवन भी अच्छा बन जाता है।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने बताया कि व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिये हमारे आचार्यों ने जीवन विज्ञान का अवदान दिया। स्वस्थ समाज संरचना के ध्येय को सामने रख कर जीवन विज्ञान के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को 12 इकाइयों के रूप में विकसित किया गया है, अतः मैं इसे द्वादशांग योग के रूप में परिभाषित करता हूँ। शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। इससे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। शिक्षा के क्षेत्र में जितने प्रयोग अब तक हुए हैं, जीवन विज्ञान उनमें से एक अभिनव एवं मौलिक प्रयोग है। इसमें विद्यार्थियों को पढ़ाया कम जाता है, प्रयोग अधिक कराये जाते हैं। शिक्षा की मूलभूत समस्याओं को ध्यान में रखकर इसका स्वरूप निश्चित किया गया है। शिक्षा के विकास के बावजूद जीवन मूल्यों का पतन हो रहा है अतः जीवन विज्ञान के व्यापक प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है।

डॉ सुरेश कोठारी, इन्दौर (सह–संयोजक) ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य जीवन की समस्याओं का समाधान करना है परन्तु वर्तमान शिक्षा स्वयं एक समस्या बन गई है। आधुनिक शिक्षा ने आजीविका देने एवं बौद्धिकता के क्षेत्र में तो पताका फहराई है, परन्तु इसके साथ–साथ आज का युवक अवसाद, चिन्ता एवं तनाव में जी रहा है। इस दुःखद स्थिति को हटाने के लिये जीवन विज्ञान अतिआवश्यक है। गुरुदेव तुलसी स्वप्नद्रष्टा, दूरद्रष्टा एवं आचार्य महाप्रज्ञ कल्पवृक्ष थे। दोनों ने भावीपीढ़ी के निर्माण हेतु जीवन विज्ञान का अवदान दिया। इसके अच्छे परिणाम भी आ रहे हैं। श्री विक्रम सेठिया, कोलकाता ने कहा कि गलत को छोड़ने एवं सही को अपनाने की शिक्षा का नाम जीवन विज्ञान है।

उद्घाटन सत्र का प्रारम्भ मुनिश्री महावीर कुमारजी के मंगल संगान से हुआ। जसोल जीवन विज्ञान अकादमी के संयोजक श्री रमेशचन्द बोहरा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन मुनिश्री हिमांशु कुमारजी ने किया।